प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 51 - A

* MAR 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Mar.12- 01	33				गीता २/२८ : ब्रह्मोपनिषदानुसार सृष्टिक्रम, **भगवान आनंद सिन्धु हैं व जगत लहरों के समान है**, जल ही सत्य है लहरें झूठी हैं	**
2	Mar.12- 02	54				गीता २/३० : सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म से रज्जु में सर्प की भाँति माया का प्रादुर्भाव हुआ, **शारीरकोपनिषद-३नों शरीर रचना**	**
3	Mar.12- 03	42				गीता २/३० : **देह देही २ पदार्थ हैं,** हमारा स्वरूप नित्य द्रष्टा देही है, दृश्य - **३ देह, ३ अवस्थाऐं व ५ कोष - स्वरूप निरूपण**	**
4	Mar.12- 04	40				हमारा वास्तविक स्वरूप सच्चि०है उसका प्रतिबिम्ब हम सबकी बुद्वि में पड़ता है तथा देह इन्द्रिय मन बुद्धि में ही सब कर्म होते हैं	
5	Mar.12- 05	50				**कर्म विकर्म अकर्म** तीन वस्तु हैं,वेद विहित कर्म ही कर्म व धर्म है,तीनों को जानना कर्तव्य है क्यों कि कर्म की गति अति गहन है	१
6	Mar.12- 06	70			lm	**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण, वेद विहित-**कर्म**, वेद विरूद्ध-**विकर्म**, कर्म का अभाव-**अकर्म** है । आत्मानंद-**श्रेय** व विषयानंद-**प्रेय सुख**	२
7	Mar.12- 07	54				**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण, कर्म की गति अति गूढ़ है, वेद विहित कर्म ही धर्म है, **कर्म** : सामान्य एवं विशेष धर्म-वर्णाश्रमानुसार	३
8	Mar.12- 08	42				**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण, कर्म की गति अति गूढ़ है, वेद विहित कर्म ही धर्म है, **कर्म** : सामान्य एवं विशेष धर्म-वर्णाश्रमानुसार	४
9	Mar.12- 09	31				सीताजी द्वारा भ०राम के नि०नि० स्वरूप का निरूपण, राम सत्-चित्-आनंद स्वरूप **हैं**, जीव ईश्वर-अंश **है** व ईश्वर से अभेद **है**	
10	Mar.12- 10	35				**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण,वेद विहित कर्म ही धर्म है,वेद विरूद्ध कर्म विकर्म या अधर्म है,४ प्रकार के भक्त, ज्ञानी मेरी आत्मा है	५
11	Mar.12- 11	30				कर्म विकर्म का आधार अधिष्ठान आत्मा/ब्रह्म है वह **अकर्म** है,ब्रह्म में माया से उत्पन्न तीनगुण व पंचभूतकृत देह में ही कर्म हैं	६
12	Mar.12- 12	44				दो ब्रह्म हैं-शब्द और परम ब्रह्म, जिसके ज्ञान का साधन त्रिकांडमय वेद,**राजा परीक्षित की कथा,** भागवत् में **नवधा भक्ति निरू०**	A
13	Mar.12- 13	21				ईश्वर व जीव के शरीरों की रचना सच्चि०पूर्ण पुरुष राम की प्रेरणा से सीताजी करती हैं वे स्वयं छायावत् राम से प्रकट होती हैं	
14	Mar.12- 14	33				दो ब्रह्म हैं-शब्द और परम ब्रह्म, परम ब्रह्म की वाणी त्रि० वेद मल-विक्षेप-आवरण निवारक है, भागवत् में **नवधा भक्ति निरू०**	B
15	Mar.12- 15	33				स्वयं सीताजी का व भ०राम के नि०नि०स्वरूप का निरूपण,सब शरीरों में **मैं** नाम का तत्व ही राम-ब्रह्म है,**सहस्त्रमुखरावण कथा**	**
16	Mar.12- 16	38				लक्ष्मण का प्रभुराम से माया ईश्वर जीव ज्ञान वैराग्य एवं भक्ति के स्वरूप हेतु प्रश्न, भगवान राम का उपरोक्त का स्वरूप निरू०	विशेष
17	Mar.12- 17	26				प्रथम जीव ब्रह्मा को भ०का **चतुर्भुज विष्णु के रूप में उपदेश**, मैं ही तेरा पिता हूँ, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त में केवल मैं ही हूँ	विशेष
18	Mar.12- 18	43				दुःख का नाम बन्ध व दुःख से छूटने को मुक्ति कहते है, मुक्ति हेतु **पाँच माताओं का निरूपण** -जन्मदात्री पृथ्वी गउू गंगा वेद माँ	a
19	Mar.12- 19	31				प्रथम जीव ब्रह्मा को भ०का **चतुर्भुज विष्णु के रूप में चतुश्लोकी ज्ञानोपदेश**, जा०स्व०सु० मिथ्या हैं तीनों काल में केवल मैं ही हूँ	विशेष
20	Mar.12- 20	35				भवकूप से मुक्ति हेतु भ० का ज्ञान आवश्यक है, जगत पिता परमात्मा के ज्ञान की साधन ५ मातऐं हैं **पाँच माताओं का निरूपण**	b
21	Mar.12- 21	49				सामवेद छा०उ०-७वाँ अध्याय :नारद सनतकुमार सम्वाद, नारदजी द्वारा अपनी विद्या का वर्णन व सनतकुमारों से ज्ञान की प्रार्थना	भाग१
22	Mar.12- 22	30				भगवान **विष्णु का ब्रह्मा** को कल्याण हेतु कर्म-भक्ति-ज्ञानयोग, सृष्टिक्रम व ब्रह्म ईश्वर जीव जगत का स्वरूप निरूपण	
23	Mar.12- 23	55				छा०उ०-७वाँ अ०:नारद सनतकुमार सम्वाद, नारद द्वारा अपनी विद्या अध्ययन का विस्तार में वर्णन व आत्म ज्ञान की प्रार्थना	भाग२
24	Mar.12- 24	33				जागृत जगत ईश्वर की समष्टि-निद्रा व स्वप्न जगत जीव की व्यष्टि-निद्रा का चमत्कार है, **ऋषि व मल्लाह कन्या का दृष्टान्त**	***
25	Mar.12- 25	55				छा०उ०-७वाँ अ० : नारद सनतकुमार सम्वाद, भगवान ही जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं	भाग३
26	Mar.12- 26	31				ब्रह्मा को भ०विष्णु का नित्यसुख हेतु कर्म-भक्ति-ज्ञानयोग का उपदेश, चातुर्वर्ण सृष्टि व उनके धर्मों का निरूपण, श्रेय व प्रेयसुख	
27	Mar.12- 27	40				छा०उ०-७वाँ अ० : नारद सनतकुमार सम्वाद,नास्तिक मिथ्या जगत को सत्-सुखरूप मानते हैं,निनि०ब्र०माया से विश्वरूप धरता हैं	भाग४
28	Mar.12- 28	31				ब्रह्म ज्ञान के पश्चात वेद और गुरु निष्प्रयोजन हो जाते है, **अहं का सच्चा अर्थ ब्रह्म होता है शरीर** नहीं,शरीर तो नौका मात्र है	
29	Mar.12- 29	36				छा०उ०-७वाँ अ० : नारद सनतकुमार सम्वाद, छः प्रकार के प्रमाण-व्याख्या, **ब्रह्म ज्ञान हेतु शब्द प्रमाण ही नेत्र हैं,**ब्र०का स्वरूप	भाग५
30	Mar.12- 30	32				भ०के दर्शन में प्रतिबन्ध-'मल विक्षेप आवरण' के नाश हेतु त्रि०वेद-'कर्म उपासना ज्ञान' साधन है, **अनेक वेश में एक ब्रह्म ही है**	
31	Mar.12- 31	53				छा०उ०-७वाँ अ० : नारद सनतकुमार सम्वाद-संसार मेरी माया है,सभी वेदों से मैं ही वेद्य हूँ मुझे पाकर जीव भवपार हो जाता है	भाग६
32	Mar.12- 32	43				छा०उ०-७वाँ अ० : सनतकुमार का नारद को ज्ञानोपदेश : **भूमा तत्व ही सुखरूप है** भूमा नाम महान अथवा ब्रह्म का है	भाग७
33	Mar.12- 33	28				सीताजी द्वारा भ०राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण,संसार में प्रकाश के ५ प्रकार-अग्नि विद्युत तारा चन्द्रमा सूर्य,**आत्मा सर्वप्रकाशक**	Imp
34	Mar.12- 34	44				जीव और ब्रह्म का **स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण**,महावाक्य से ब्रह्म एवं आत्मा एकत्व, **बुद्धि** एवं **फलव्याप्ति** + **ज्ञान प्रक्रिया में त्रिपुटी**	विशेष